## सम्पादक के नाम

### पप्पू शब्द सियासी तकरीरों और चुटकुलों से इतनी जल्दी गायब हो गया.....

उम्मीद यूं कि , पप्पू हमारे माशरे की बेहद लोकप्रिय संज्ञा है । हर धर्म खास तौर से हिन्दू धर्मावलम्बियों में कोई घर ऐसा नही होगा जिसमे कोई पप्पू भैया , पप्पू चाचा या मामा न हो । इसे विशेषण बनाने के कुत्सित प्रयासों की यही गति होनी थी।

बेटे पप्पू के बिना घर लौटे माएँ खाना नहीं खाती रही है पिता बिस्तर पर करवटें बदलते रहे है । पप्पू घर मे गुड्डी की फीस जमा करता , शाम को सब्जी खरीदता और पिता को अस्पताल ले जाता और मां के लिए लगन में साड़ी प्रेस करके देता रहा है। दर्जी के यहां चार बार तगादा कर अम्मा का ब्लाउज और गुड्डी का सूट लाता रहा है।

पप्पू नाम को मजाक का पात्र बनाना गुनाह था । वह बदनाम करने की चीज ही नही था , पप्पू घर घर का हिस्सा था उसे बदनाम करना हिंदुस्तान के करोड़ो करोड़ मां बाप की परवरिश को लानत भेजना था। लानत भेजने की राजनीति को गर्त में जाना ही था ।

पप्पू को भैया ही हमने जाना है , बेटा ही जाना है , चाचा मामा ही जाना है । उसे उस जगह से कोई प्रोपेगेंडा कभी हिला ही नहीं सकता था जैसे गालिब और मीर को जौक रिप्लेस नही कर सके और खुद ही अंत मे स्वीकार किया कि बहुत जोर मारा गज़ल में मगर ..... जौक इसीलिए जौक हुए कि उन्होंने यह कुबूल कर लिया ... वरना जौक भी joke बन के रह जाते .... गालिब का क्या वह तो शायरे मरहूम जनाब जौक साब के जनाजे में सर झुकाए दुखी मन से तब भी शिरकत करते .....

यह फितरत की बात है । फितरत वो नामुराद नेमत है जिसका बदलना बहुत मुश्किल होता है । जैसे जलाना आग की फितरत है बुझाना पानी की .... अब आप अपनी फितरत देखें कि वो आग के करीब है या पानी के ...

**- पंकज मिश्र**

### बंगाल में लॉ ऑर्डर की समस्या हम एक बार मान भी लेंगे....

**ले**किन नही, आप एक रोड शो करते हो उसके अन्दर बड़ी संख्या में राम और हनुमान की ड्रेस पहने लोग चल रहे हैं, इसे आप गणतंत्र बचाओ रैली% कहते हो.....सबसे पहले समाज सुधारक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की मूर्ति को तोड़ा जाता है, नारे लगाए जाते हैं विद्यासागर के दिन खत्म, हाउज द जोश!...

उपद्रव मचाया जाता है सड़को पर आगजनी की जाती है,.....अरे पुलिस आपको दोड़ाएगी नही तो क्या आपकी आरती उतारेगी!.....फिर आप फिर देश भर में चिल्लाते हो.....यह तो मिनी पाकिस्तान बन गया है?.....

कुछ दिन पहले यही काम केरल में किया जा रहा था केरल में भी ऐसा ही संघर्ष देखने को मिल रहा था, जैसा आज बंगाल में दिख रहा है .....और यकीन मानिए जैसे ही केरल में विधानसभा चुनाव होंगे तो ठीक यही रोड शो वाला दृश्य आपको वहाँ भी देखने को मिलेगा.....

यानी बंगाल भी मिनी पाकिस्तान है केरल भी मिनी पाकिस्तान है, जहाँ पर आपकी पार्टी का वोट नही है वो सारी जगह मिनी पाकिस्तान बन जाती है और आपको वहाँ खुलकर खेलने का अधिकार मिल जाता है, आप चाहते हो राज्य सरकार आपको कुछ न बोले..... लेकिन जब आप कश्मीर में अलगावावादी दल पीडीपी के मुफ्ती मोहम्मद सईद से गठबंधन कर लेते हो तो सब सही हैं,..... जब आप दार्जिलिंग में अलग गोरखालैंड की मांग करने वाले गोरखा जनमुक्ति मोर्चा से गठबंधन कर लेते हो सब सही हैं.....जब आप आज़ाद नागालैंड की मांग करने वाले नागा जनमुक्ति मोर्चा का गठबंधन कर लेते हो सब सही है,..... जब आप अलग त्रिपुरा की मांग रखने वाला उग्रवादी संगठन NLFT से गठबंधन कर लेते हो सब सही है.....

यानी आप जो करो वो सब सही हैं फिर आप ये चाहते हो कि असहमति की हर आवाज को राष्ट्रवाद के नाम पर दबा दिया जाए.....आपके सारे धत करमो को हम आँख बंद कर सही मान ले और ये भी मान ले कि जो आपका विरोध कर रहा है न सिर्फ वो गलत कर रहा है बल्कि वो देश द्रोह कर रहा है.....

ग़जब का दोगलापन है, ग़जब की हिप्पोक्रैऽसी है.....

**- गिरीश मालवीय**

# एक भयावह प्रेस कांफ्रेंस!

**कि**तनी भयावह थी पीएम मोदी की प्रेस कांफ्रेंस ? 5 सालों के शासन का सम्पूर्ण निचोड़ थी यह प्रेस कांफ्रेंस । किस मूर्ख व्यक्ति को 5 साल देश सर्वोच्च पद पर ढोता रहा है , यह आज सबने देखा । एक अदने से प्रश्न का उत्तर इस व्यक्ति के पास नहीं था । इस प्रेस कांफ्रेंस से यह भी साबित हुआ कि यह तो केवल मुखौटा था , शासन की बागडोर तो किसी और के ही हाथ में थी लेकिन इस व्यक्ति को सत्ता का प्रयोग करना बखूबी आता है ।

आज फिर एक बार यह स्पष्ट हुआ कि मुसलमानों से नफरत करने और मनुवादी व्यवस्था के पोषक होने पर आरएसएस और उसकी लॉबी , ब्राह्मणवादी मीडिया किसी महामूर्ख व्यक्ति को भी महान विकास पुरुष साबित कर देश के सिर पर बिठा सकता है । मोदीजी को देखकर मूर्ख कालिदास का उदाहरण याद आता है जब पंडितों ने मूर्ख कालिदास को विदुषी राजकुमारी के सम्मुख विद्वान साबित कर दिया था और उसका विवाह जड़मूर्ख कालिदास से करवा दिया था ।

5 साल के शासन में सारा खेल प्रस्तुतिकरण (प्रजेंटेशन ) और व्याख्या ( इंटरप्रिटेशन ) का था उसके वाबजूद दुबारा सरकार बनाने का दावा जबकि चेहरे से हवाइयां उड़ रही थी ।

यह चुनाव भारतीय लोकतंत्र , समाज और संविधान के लिए लिटमस पेपर के टेस्ट समान है । आरएसएस ने अपने मुखौटे राजनीतिक दल बीजेपी के माध्यम से एक मूर्ख मगर तानाशाह व्यक्ति को इसीलिए चुना था ताकि देश पर मनुवादी शासन तंत्र को थोप सके। इन 5 सालों में सरकार और संघ की यही कोशिश रही है कि भारतीय संविधान को अधिकतम नुकसान पहुंचा सके और लोकतांत्रिक संस्थाओं को खत्म कर सके ।

देश की बौद्धिक संस्थाओं और बुद्धिजीविता पर भयंकर हमला इसकी घातक नीति का प्रमाण है और देश भर में मीडिया और सोशल मीडिया द्वारा नफरत ,अज्ञान और कुतर्कों से युवाओं का ब्रेन वॉश कर अंधभक्तों की बहुत बड़ी भीड़ बनाई गई है जो कुछ भी करने हेतु तैयार हैं अर्थात संघ और मोदी सरकार ने करोड़ों लोगों की ऐसी भीड़ तैयार कर ली है जो राष्ट्र की एकता , अखंडता और संविधान के साथ ही लोगों की आजादी के लिए खतरा हैं ।

**खैर ! 23 मई को चुनाव परिणाम आ जाएंगे देखना दिलचश्प होगा कि देश की जनता किनको चुनती है और किसको बहुमत मिलता है । यह चुनाव और इसके परिणाम राष्ट्र के लिए सीमा विभाजक की तरह हैं । इन 5 सालों के शासन ने हमें यह सबक दिया है कि "कट्टरपंथी संगठन और व्यक्ति , संविधान और राष्ट्र के सम्मुख सबसे बड़ा खतरा हैं ।" खैर ! मोदीजी ने अपने 5 वर्षीय कार्यकाल में एक प्रेस कांफ्रेंस का सामना करने की हिम्मत तो की, हालांकि ! प्रश्नों के उत्तर देने की हिम्मत उनकी नहीं हो सकी हो तो इसमें उनकी कोई गलती थोड़े न है !! आखिर देश को उसका असली पप्पू मिल ही गया।**

आतंकवाद की आरोपी साध्वी प्रज्ञा सिंह को टिकट देना भी प्रमाणित करता है कि संघ देखना चाहता है कि अभी देश इनको किस सीमा तक स्वीकार करने हेतु तैयार है ? प्रज्ञा सिंह ने जो विचार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और उनके हत्यारे गोडसे के प्रति व्यक्त किये हैं वह ही संघ और हिन्दू महासभा के आधिकारिक विचार हैं लेकिन देश भर में हुई किरकिरी के कारण उससे माफी मंगवाई गयी है । संघ कछुवे की तरह है जो खतरा महसूस होते ही अपने हाथ पैर अपने खोल के अंदर समेट लेता है । हार की आहट से संघ ने रणनीति बदल ली है ।

**- कमल कुमार**

# फासिस्ट आंधियों की गिरफ़्त में भारत

**हिंदीवाणी, नई दिल्ली:**इंदिरा गांधी ने 1975 से 1977 तक आपातकाल लगाया था। सारे विरोधी दलों के नेता गिरफ्तार कर जेल में डाल दिए। प्रेस पर सेंसरशिप लागू कर दी गई। उसके बाद चुनाव हुए तो कांग्रेस बुरी तरह हार गई।...यह बात उस समय के ज़िंदा लोग जानते हैं और अब इतिहास में भी दर्ज है।

एक बात और है जो उस समय के ज़िंदा लोग और उस समय का इतिहास बताता है कि इमर्जेंसी के दौरान हुए आम चुनाव यानी लोकसभा चुनाव में इंदिरा गांधी चाहतीं तो क्या नहीं कर सकती थीं। वह चाहतीं तो चुनाव निष्पक्ष नहीं होते और वह फिर से सत्ता में लौट सकती थीं। पर, उन्होंने कुख्यात होने के बावजूद लोकसभा चुनाव में बेईमानी नहीं कराई। तब तक चुनाव आयोग उनकी मुट्ठी में था और टी एन शेषन का भी अवतार नहीं हुआ था।

चुनाव आयोग की इज़्ज़त गिरवी है। सुप्रीम कोर्ट के चीफ़ जस्टिस विवादों में आ गए। अदालतों के कई फ़ैसलों पर लोगों ने नुक्ताचीनी की। जिन राजनीतिक दलों और उनके कार्यकर्ताओं को फासिस्ट ताक़तों से सड़कों पर लड़ना था वो दुम दबाकर बैठे हैं। यहाँ तक कि एक दो दल जो फासिस्ट ताक़तों के खिलाफ हैं उनके कार्यकर्ता और लोकल नेता लंबी तान कर सो रहे हैं।

पश्चिम बंगाल की घटनाएँ बता रही हैं कि वहाँ भाजपा और आरएसएस ममता बनर्जी नामक महिला को हराने के लिए गुंडे, मवालियों तक इस्तेमाल कर रहे हैं। इतिहासकार और बंगाल सुधारवादी आंदोलन के अग्रणी नेता रहे ईश्वरचन्द्र

विद्यासागर की मूर्ति की मूर्ति टूटने की जब खबर आई तो मुझे यक़ीन नहीं हुआ। क्योंकि कोई बंगाली यह हरकत नहीं करेगा। फिर मैंने उस घटना के विडियो देखे।...जो शंका थी, वही सच साबित हुई। दूसरे राज्यों से भेजे गए गुंडों ने वहाँ तोड़फोड़ मचाई। एक संगठित गिरोह ने वह मूर्ति उसी अंदाज में तोड़ी जैसे अयोध्या की घटना को अंजाम दिया गया था। मीडिया ने इस घटना की सही रिपोर्टिंग नहीं की है। एकाध चैनलों पर ही उन विडियो को दिखाया गया। बहरहाल, सोशल मीडिया पर वो विडियो अनगिनत लोगों द्वारा डाले गए है।

**आरएसएस ने ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के लिखे इतिहास को कभी पसंद नहीं किया। आरएसएस के निशाने पर तमाम बंगला लेखक, सुधारक, इतिहासकार रहे हैं।**

भाजपा और मोदी ब्रिगेड अगर यह चुनाव जीतता है यह जनता की हार नहीं बल्कि उन राजनीतिक दलों और उनके कार्यकर्ताओं की हार होगी जो ममता और उनके वर्करों के अंदाज में फासिस्ट ताक़तों से टकराने के लिए घरों से बाहर नहीं निकले। कांग्रेस, कम्युनिस्ट, बसपा, सपा के सुविधाभोगी कार्यकर्ताओं की कमज़ोरी के चलते फासिस्ट ताक़तें लगातार मज़बूत हो रही हैं।

एक तरफ़ आतंकी मुलज़िम साध्वी प्रज्ञा ठाकुर बड़ी बेहियाई से आतंकवादी नाथूराम गोडसे को देशभक्त बता रही है तो दूसरी तरफ़ उतनी ही बेहियाई से भाजपा नेता गांधी जी को माल्यार्पण करते हैं। भाजपा में ज़रा भी शर्म बची हो तो आज ही प्रज्ञा को पार्टी से निकाल बाहर करे। वरना गोडसे देशभक्त और महात्मा गांधी को माला एकसाथ नहीं चल सकते।

लँगड़ा भारतीय लोकतंत्र किसी और तरफ़ बढ़ चला है। 23 मई के बाद अगर मोदी लौटे तो आपको इसका अंदाज़ा हो जाएगा...तमाम लचकदार शाखें भी टूट जाएंगी।

FASHION.IN

Available all types of ladies cotton kurties, Fancy Kurties, Jegin, legin, Fancy Top, T-Shirts, Trousers and imported material in wholesale price.

SPECIALITY IN FANCY TOP & FANCY KURTIES

लेडीज कपड़ों पर भारी छूट
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें

Address : 5M/22, N.I.T. FARIDABAD NEAR DAYANAND WOMEN COLLEGE, ST. JOSEPH CONVENT SCHOOL ROAD . 9911489490